अर्थ

मीनू पालीवाल

यह लेख पढ़ना सिखाने के प्रचलित तरीक़ों और इन तरीक़ों को काम में लेने के दौरान आने वाली समस्याओं का ज़िक्र करता है। और फिर चर्चा करता है कि सही मायनों में पढ़ने का अर्थ क्या है और बच्चे यह कैसे सीखते हैं? कक्षा में जब बच्चे पढ़ने का काम कर रहे थे उस दौरान किए गए कुछ अवलोकनों और उनका विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए लेख यह समझने में मदद करता है कि पढ़ना सीखने, माने जो लिखा गया है उसके अर्थ को समझने में अनुमान लगाना, पूर्वज्ञान और अनुभव कैसे काम करते हैं? सं.

पढ़ना क्या है? इस विषय पर मैंने बहुत-से लेख पढ़े हैं। एक मुख्य बात जो अधिकांश लेख रेखांकित करते हैं, यह है कि “पढ़ना केवल अक्षर, मात्रा पहचानने और जो लिखा है उसको हूबहू बोलने तक सीमित नहीं है। पढ़ने में अनुमान, स्वयं द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शब्द पहचान की अहम भूमिका होती है।” मैंने इन बातों को कक्षा में पढ़ने की प्रक्रियाओं के दौरान घटित होते देखा है, और इससे मुझे पढ़ने की प्रक्रिया को सम्पूर्णता में समझने में मदद मिली है। पढ़ने में अर्थ केन्द्र बिन्दु की तरह काम करता है। अक्षर व मात्रा के साथ-साथ, शब्द पहचानना, वाक्य की संरचना को समझते हुए आगे के शब्दों के बारे में, और टैक्स्ट की संरचना को समझते हुए आगे क्या आएगा, यह अनुमान लगाना भी पढ़ना सीखने के लिए बहुत ज़रूरी है। ये बातें बेहद महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि आज भी अधिकांश स्कूलों में पढ़ना सिखाने के लिए सिर्फ़ अक्षर, मात्रा की पहचान और उन्हें याद करवाना ही ज़रूरी समझा जाता है और अर्थ तक पहुँचने व अनुमान और शब्द पहचान वाले कौशल का विकास करने की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया जाता। मैंने बच्चों की पढ़ने की प्रक्रियाओं का अवलोकन करते हुए पाया कि बच्चे पढ़ते हुए अर्थ निर्माण करते चलते हैं। इस लेख में ऐसे ही कुछ उदाहरणों को साझा किया गया है।

उदाहरण 1

कक्षा 4 के 4-5 बच्चे *बरखा* सीरीज़ की किताब *तालाब के मज़े* पढ़ रहे थे। यह किताब बगुलों के बारे में है। ये बच्चे छत्तीसगढ़ के सरकारी स्कूल में पढ़ रहे थे। यहाँ बच्चे छत्तीसगढ़ी भाषा बोलते हैं। छत्तीसगढ़ी में बगुले को कोंकड़ा बोलते हैं। किताब में काफ़ी पन्नों पर बगुलों की तस्वीर बनी है। बच्चे कहानी पढ़ने के दौरान जहाँ-जहाँ ‘बगुला’ लिखा था उसे लगातार ‘कोंकड़ा’ पढ़े जा रहे थे। मुझे लगा, कितनी अजीब बात है कि कोंकड़ा ‘क’ से शुरू होता है और बगुला ‘ब’ से, और दोनों शब्द देखने में भी काफ़ी अलग



दिखाई देते हैं इसके बावजूद बच्चे बगुले की बजाय कोंकड़ा पढ़ रहे थे।



एक दिन वे दोपहर को तालाब पर पहुँचे।
वहाँ बहुत सारे बगुले आए हुए थे।
तालाब सफ़ेद बगुलों से भरा हुआ था।

यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि बगुले शब्द को छोड़कर बाक़ी शब्द सही पढ़े जा रहे थे। उदाहरण के लिए, वहाँ बहुत सारे कोंकड़े आए हुए थे। बच्चों ने जहाँ 'बगुला' शब्द आया वहाँ 'कोंकड़ा' पढ़ा और जहाँ 'बगुले' शब्द आया वहाँ 'कोंकड़े' और इसी तरह 'बगुलों' को 'कोंकड़ों' पढ़ा। यहाँ पर बच्चे को सुधारना और बगुला ही पढ़ने के लिए बाध्य करना उसके अर्थ निर्माण की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करना है।

उदाहरण 2

नर्मदा की आत्मकथा (कक्षा 4 मध्य प्रदेश की पाठ्यपुस्तक) में एक लाइन आई

लिखा था : मेरा जन्म इसी कुण्ड से हुआ था।

पढ़ा गया : मेरा जन्म इसी कुण्ड में हुआ था।

मेरे साथ कक्षा में शिक्षक मौजूद थे, उन्होंने इस बात पर ग़ौर नहीं किया। मैंने उनका ध्यान इस तरफ़ दिलाया। शिक्षक काफ़ी आश्चर्य से बोले कि क्या ऐसा हुआ है? ये बच्ची तो बहुत अच्छा पढ़ती है (यहाँ अच्छा पढ़ने का मतलब जैसा लिखा है वैसा ही वाचन करने से है)। शिक्षक बच्ची से फिर से पढ़वाना चाहते थे। मैंने कहा कि आप पॉइंट आउट करके अपनी तरफ़ से मत बताइएगा कि 'से' लिखा है, तुमने 'में' क्यों पढ़ा। यदि आप जानना चाहते हैं कि ये सिर्फ़ एक ग़लती है और दोबारा पढ़ने में सुधर जाएगी तो आप बच्ची से पूरा अनुच्छेद फिर से पढ़ने के लिए कहें। बच्ची आगे पढ़े जा रही थी। शिक्षक ने उसे रोका और पूरा अनुच्छेद फिर से पढ़ने के लिए कहा। इस बार भी बच्ची ने यही पढ़ा, 'मेरा जन्म इसी कुण्ड में हुआ था।'

कारण

हम आम बोलचाल में कहते हैं कि मेरा जन्म नागपुर में हुआ था। यह तो नहीं कहते कि मेरा जन्म नागपुर से हुआ था, परन्तु नदी के सन्दर्भ में यह 'से' हो जाता है।

उदाहरण 3

कक्षा तीसरी के बच्चे *बरखा* सीरीज़ की पहले स्तर की किताब *फूली रोटी* पढ़ रहे थे। उस किताब में लगभग 7 बार 'मम्मी' शब्द लिखा है। कक्षा में 13 बच्चे पढ़ सकते थे। उनमें से 10 बच्चों ने जहाँ-जहाँ मम्मी लिखा था उसे 'माँ' पढ़ा।

कुछ बच्चों ने माँ के अलावा भी शब्दों को बदलकर पढ़ा, जैसे– 'लोई' (आटे की लोई) को



बच्चों ने अपने घर पर बोले जाने वाले शब्द से बदल दिया। कारण, बच्चे पढ़ने के दौरान अर्थ निर्माण के लिए पूर्वज्ञान का उपयोग करते हैं, जिससे वे पढ़ने में केवल अक्षर-मात्रा पर निर्भर न हों। पूर्वज्ञान और अक्षर-मात्रा की मदद से बच्चे



अनुमान भी लगाते हैं। बच्चों ने चित्र और सन्दर्भ के आधार पर 'मम्मी' को 'माँ' पढ़ा है और यही कुछ अन्य शब्दों के साथ भी होता है। पर यहाँ अर्थ नहीं बदल रहा है, कोई ऐसा शब्द नहीं बदला गया जिससे अनुच्छेद का अर्थ ही बदल जाए। यह सब अनायास नहीं हो रहा है। हम सभी को पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया को समग्रता में समझने के लिए बच्चों का बारीक़ अवलोकन करने की ज़रूरत है।

शिक्षक से बातचीत

मेरे बग़ल में शिक्षिका बैठी हुई थीं। जब ऐसा हुआ तो मैंने उन्हें बताया कि बच्चे मम्मी को लगातार माँ पढ़ रहे हैं। उन्हें यक़ीन नहीं हुआ। आश्चर्य से मुझसे बोलीं कि रुको, एक बच्चे को बुलाते हैं और फिर से पढ़वाते हैं। मैंने उनसे थोड़ा ठहरने का अनुरोध किया और कहा कि जब वो पढ़ रहा होगा तब आप उसे बीच में मत रोकिएगा और न ही किसी तरह से बच्चे को संकेत कीजिएगा। बच्चा आया उसने पाठ पढ़ दिया। अबकी बार भी हर जगह 'माँ' ही पढ़ा गया।

शिक्षिका से पूछा कि आख़िर ऐसा क्यों हो रहा होगा? शिक्षिका बिना ज़्यादा समय लिए बोलीं, "अरे, हमारे बच्चे माँ ही बोलते हैं, मम्मी नहीं बोलते इसलिए माँ ही पढ़ रहे हैं।"

मेरे विचार

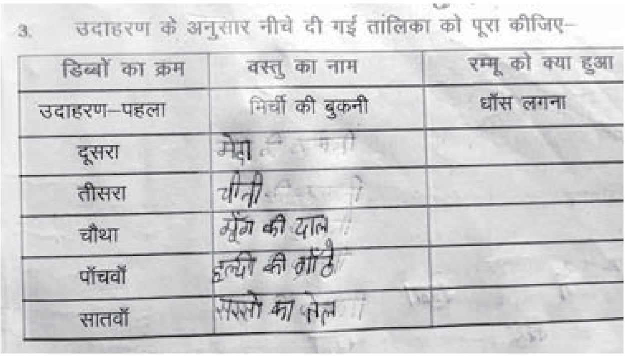
जिन शिक्षिका की कक्षा के यह अवलोकन हैं वे बच्चों से बहुत बातचीत करती हैं। शायद इसलिए और स्कूलों के मुक़ाबले यहाँ पुस्तक पढ़ पाने वाले बच्चों की संख्या अधिक है। लगभग सारे बच्चे बोलते हैं और मैडम बातचीत को बहुत बढ़िया से विस्तार देती हैं।

शिक्षिका बच्चों के साथ बातचीत में आनन्द लेती हैं इसलिए मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने सारे बच्चों द्वारा मम्मी को माँ पढ़ा जाना वे स्वयं अवलोकन में क्यों नहीं पकड़ पाईं! जब उन्होंने स्वयं यह होते हुए देखा और उसपर ज़रा-सा चिन्तन करने के बाद ही, तुरन्त समझ लिया कि ऐसा क्यों हो रहा है। वे जानती थीं कि बच्चे माँ बोलते हैं, पर उन्होंने बच्चों के पढ़ने में मम्मी को माँ पढ़े जाने पर ग़ौर नहीं किया। इसके दो तात्पर्य हैं, एक तो यह कि सुनने वाले भी अर्थ पर ही ध्यान देते हैं और सुनते समय मम्मी और माँ का अर्थ एक ही होने पर वह ठीक ही लगता है। दूसरे, चूँकि अर्थ स्पष्ट हो जाता है इसलिए वर्णों की बारीक़ी पर ध्यान देना कम ज़रूरी हो जाता है।

एक और उदाहरण देखते हैं।

उदाहरण 4

कक्षा 4 में 'गुलाब जामुन' पाठ में एक बच्चा बहुत-से डिब्बे खोलकर गुलाब जामुन ढूँढ़ने की कोशिश करता है। उस पाठ की एक गतिविधि का चित्र आप आगे देख सकते हैं। इस गतिविधि में 3 कॉलम हैं– डिब्बों का क्रम, वस्तु का नाम, रम्मू को क्या हुआ। उदाहरणस्वरूप, पहले डिब्बे में मिर्ची की बुकनी और धाँस लगना लिखा है। एक बच्ची ने नीचे के सारे कॉलम में मैदा की बुकनी, चीनी की बुकनी, मूँग की बुकनी, आदि लिखा था। उस बच्ची को मैंने बुलाकर पूछा कि 'बुकनी' का अर्थ क्या है? उसने कहा, बुकनी यानी डिब्बा। क्या बच्ची का अनुमान आपको तार्किक लगता है? मेरी नज़र में बच्ची ने सीखने के एक प्रतिफल का प्रदर्शन किया है (नए शब्दों का सन्दर्भ की मदद से अर्थ पता करना)। हाँ, यह ज़रूर है कि इस बार अनुमान गड़बड़ हुआ है, परन्तु इस उदाहरण



3. उदाहरण के अनुसार नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए–

डिब्बों का क्रम	वस्तु का नाम	रम्मू को क्या हुआ
उदाहरण–पहला	मिर्ची की बुकनी	धाँस लगना
दूसरा	मेदा	
तीसरा	चीनी	
चौथा	मूँग की दाल	
पाँचवाँ	हल्दी की गाँठ	
सातवाँ	सरसों का तेल	

से हम यह कह सकते हैं कि बच्ची सन्दर्भ की मदद से नए शब्दों का अर्थ पता करने की क्षमता विकसित कर रही है। बाद में मैंने बच्ची से पूछा कि रम्मू को धाँस क्यों लगी? बच्ची ने कहा, क्योंकि डिब्बे में मिर्ची की बुकनी थी। मैंने बच्ची से पूछा, 'मिर्ची की बुकनी' में बुकनी का अर्थ डिब्बे के अलावा और क्या हो सकता है। जब जवाब नहीं आया तो पूछा मिर्ची से धाँस कब ज़्यादा लगती है? जब मिर्च पीसी हुई होती है या जब सैंगी (बिना पीसी) होती है। अब बच्ची बोली, बुकनी मतलब मिर्च का चूरा। और फिर उसने स्वयं ही अपने लिखे को ठीक भी कर लिया, जो आप ऊपर चित्र में देख सकते हैं।

उदाहरणों का विश्लेषण

इन उदाहरणों में यह साफ़तौर पर दिखता है कि पूर्वज्ञान, अनुभव पढ़ने को प्रभावित करता है। यदि पढ़ना सिर्फ़ अक्षर मात्रा तक सीमित होता तो बच्चे बगुला को कोंकड़ा बिलकुल नहीं पढ़ते। 'बगुला' और 'कोंकड़ा' शब्द की लिखित आकृति में बहुत फ़र्क़ है। ऊपर दिए उदाहरण में यदि बच्चों से बातचीत की जाए कि कोंकड़े को बगुला भी बोलते हैं। क्या उसे किसी और नाम से भी जाना जाता है? और यह भी चर्चा की जा सकती है कि दूसरी भाषा में इसे और क्या-क्या कहते हैं। इस बातचीत के बाद हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि कुछ बच्चे बगुला पढ़ने लगें। सम्भावना यह भी है कि बहुत-से बच्चे इसके बाद भी कोंकड़ा ही बोलें। यदि हम बच्चों को बगुला शब्द को सुनने के ज़्यादा मौक़े देंगे तो अधिकतर बच्चे बगुला पढ़ने लगेंगे।

इस उदाहरण में हमने देखा कि बच्चे जो शब्द इस्तेमाल करते हैं वह उनके पढ़ने में भी आ जाते हैं। जो भी शब्द उन्होंने बोले, सुने और संवाद में इस्तेमाल किए हैं वे उनके पढ़ने में आ जाते हैं। सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एक साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं, इनमें कोई एक रेखीय क्रम नहीं है।

पढ़ने का उद्देश्य पाठ का अर्थ प्राप्त करना है, इसलिए यदि वाचन करने में कुछ शब्द अदल-बदल भी जाते हैं तो हमें तब तक परेशान नहीं होना चाहिए, जब तक कि अर्थ ही नहीं बदल जाता। ये ठीक है कि फिर भी इसे सुधारने का धीरे-धीरे प्रयास होना चाहिए ताकि आगे ज़्यादा कठिन टैक्स्ट से जूझने में दिक़्क़त न हो। इसके लिए हम आगे क्या कर सकते हैं इसपर विचार किया जा सकता है। पहली बात तो यह है कि बच्चे किसी शब्द को पढ़ पाएँ उसके लिए उन्हें उस शब्द का मौखिक रूप पता होना चाहिए और वे उनके उपयोग में होने चाहिए। जब वो शब्द बोलने में आने लगेंगे तो उनका पढ़ना भी सही होता जाएगा। उदाहरण के लिए, वाक्य 'चिड़िया की चहचहाहट सुनाई दे रही है', में कोई बच्चा चहचहाहट को चह-चहा-हट की बजाय चहच-हाहट पढ़े तो हम किस आधार पर उसे ग़लत बोलेंगे? और इसलिए ही यह कहा जाता है कि जो भाषा वो पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं उसका मौखिक उपयोग करने के ढेरों मौक़े साथ-साथ मिलते रहें। वैसे अगर बच्चे को चहचहाहट शब्द पता होगा तो एक-दो बार उस शब्द को देखने पर वह पूरा ही बोलेगा, ऐसा मेरा मानना है।

इसी तरह 'बुकनी' वाले उदाहरण में बच्ची से उपयुक्त सवाल पूछना, और उसे सोचने का समय देने और उस शब्द से जुड़े धाँस जैसे

शब्द पर ध्यान दिलाने से वह समझ गई कि बुकनी का मतलब क्या होगा।

व्यक्तिगत रूप से मैं ऊपर वाले उदाहरणों में सिर्फ़ नदी वाली ग़लती को सुधारने पर काम करूँगी, वो भी इसलिए क्योंकि नदी वाली ग़लती में अवधारणा की गड़बड़ी है। नदी वाले उदाहरण में बच्चे इंसानों के जन्म को नदी के जन्म से जोड़ रहे हैं... बाक़ी की ग़लतियाँ मुझे ग़लतियाँ नहीं लगतीं। वैसे भी एक तरफ़ तो हम कहते हैं कि बच्चों की भाषाओं का सम्मान करना चाहिए जिसका एक उदाहरण मम्मी को माँ पढ़ना है वहीं दूसरी ओर उसी को सुधारना भी चाहते हैं और वो भी सीधा पढ़ने में। ये ग़लतियाँ (माँ, कोंकड़ा) आने वाले समय में अपने-आप ही सुधर जाएँगी जब बच्चे ज़्यादा लोगों से 'मम्मी' और 'बगुला' जैसे शब्दों को सुनेंगे क्योंकि बच्चे बाक़ी बहुत-से शब्दों को 'सही' पढ़ रहे हैं।

कक्षाओं में अर्थ पर ध्यान कम ही जाता है। किसी भी टैक्स्ट को पढ़ने के बाद बच्चों से यह नहीं पूछा जाता कि उन्होंने जो पढ़ा है उसके बारे में वे अपने शब्दों में बताएँ। बच्चे ने यदि लिखित संकेतों को हूबहू बोलकर बता दिया तो मान लिया जाता है कि वह पढ़ना सीख गया है। बच्चे बिना अर्थ के पढ़ रहे हैं, यह तब पता चलता है जब वे उतने ही प्रश्नों के उत्तर दे पाते हैं जितने पाठ से सीधेतौर पर प्राप्त किए जा सकें। जिन प्रश्नों में अनुभव जोड़ने की ज़रूरत होती है उन प्रश्नों के उत्तर वे नहीं दे पाते। और ऐसा सभी विषयों की कक्षाओं में दिखता है। जैसे गणित में इबारती प्रश्नों को यदि शिक्षक पढ़कर बता देते हैं तो बच्चे हल कर लेते हैं पर स्वयं पढ़कर प्रश्न हल नहीं कर पाते।

शिक्षकों के काम का एक बहुत ज़रूरी हिस्सा बच्चों और उनके काम का अवलोकन करना है। और अवलोकन के बाद वे सीखने में कहाँ और कैसी मुश्किल का सामना कर रहे हैं उसपर और उसके हल पर चिन्तन। और फिर जो भी हमने सोचा उसको बच्चों के साथ करना और फिर समझना व फिर सोचना। यह सिलसिला असल में चलता ही रहता है। लेकिन समाज ने और कुछ हद तक प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों ने भी यही मान लिया है कि प्राथमिक कक्षा में तो बच्चों को मात्र a, b, c, d; 1, 2, 3, 4; क, ख, ग, घ ही तो याद करवाना है। मुझे लगता है कि इस समझ को अब हमें पुरज़ोर चुनौती देनी है।

मीनू पालीवाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 2017 से काम कर रही हैं। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के साथ काम करना उन्हें अच्छा लगता है।

सम्पर्क : meenu.paliwal@azimpremjifoundation.org